मेघ पाईन अभियान

बढ़ते कदम...

सहयोग

Arghyam
Safe, sustainable water for all
www.arghyam.org

अर्घ्यम
८४०, २ मंजिल, ५ मेन, इन्दिरा नगर,
१ स्टेज, बंगलौर - ५६० ०३८,
कर्नाटक

कार्यान्यवन में सहयोग

चन्द्रशेखर
ग्राम्यशील, जेल के पीछे नया नगर
सुपौल-८५२१३१
बिहार
फोनः ०६४७३-२२५७३६

रमेश कुमार
घोघरडीहा प्रखण्ड स्वराज्य विकास संघ, ग्राम पोस्ट जगतपुर,
घोघरडीहा,
मधुबनी-८४७४०२
बिहार
फोनः ६१-६४३१०२५३७३

प्रेम कुमार
समता, ग्राम पोस्ट सनहौली,
खगड़िया-८५१२०५
बिहार
फोनः ६१-६४३००४२६७८

राजेन्द्र झा
कोसी सेवा सदन, आचार्य वन, महिषी,
सहरसा-८५२२१६
बिहार
फोनः ०६४७८-२७७०६७

मार्ग दर्शक

दिनेश कुमार मिश्रा
पटना
बिहार
फोनः ६१-६४३१३०३३६०

अभियान की संकल्पना व प्रबंधन में सहयोग

एकलव्य प्रसाद
विकास कार्यकर्ता, प्राकृतिक एवं सामाजिक संसाधन प्रबंधन
ई-मेलः graminunatti@gmail.com

Arghyam अर्घ्यम
Safe, sustainable water for all

मेघ पाईन अभियान

मेघ पाईन अभियान

लोगों के अनुभव

मेघ पाईन अभियान

बिमला देवी

ग्राम-खुटहा, पंचायत दहमा-खेरी-खुटहा, जिला-खगड़िया, ''वर्षाजल का स्वाद बहुत अच्छा लगा और इसी वजह से हमने बर्तनों में इकट्ठा करना शुरू कर दिया है। पर हमें ज्यादा से ज्यादा वर्षाजल इकट्ठा करने के लिये स्थानीय उपाय सोचना होगा''

धूथर प्रसाद यादव

ग्राम-सूर्ती पट्टी, पंचायत बैरिया, जिला-सुपौल, ''इन ७० सालों में मैं पहली बार वर्षाजल पीया, काश हमें इस के बारे में पहले पता चलता क्योंकि इस पानी को पीने से आनन्द मिलता है''

विजय कुमार साव

ग्राम-कोठीया (हरदीया बासा), पंचायत महिषी (दक्षिणी), जिला-सहरसा, ''यह जल मुझे इतना अच्छा लगा कि मैंने अपने स्तर पर भी वर्षाजल संग्रहण का प्रचार-प्रसार शुरू कर दिया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग को इस तकनीक के बारे में पता चल सके''

छोटकैन यादव

ग्राम-बेलही, पंचायत लखनौर (पश्चिमी), जिला-मधुबनी, ''मैं पिछले १० दिनों से वर्षाजल को जमा करके रोज उसको देखा करता हूँ। यह पानी बिलकुल खराब नहीं हुआ है वैसे का वैसा ही है''

चाँदनी कुमारी और रामाशीष कुमार

ग्राम-खुटहा, पंचायत दहमा-खैरी-खुटहा, जिला खगड़िया, ''गाँव में बैठक के दौरान हमें वर्षाजल संग्रहण के बारे में पता चला था और उसी को ध्यान में रख कर हम दोनों ने छत से पानी संग्रह किया। पानी ठंडा और अच्छा लगा''

हज़ीला खातुन

ग्राम-चकला (पश्चिम), पंचायत बैरिया, जिला-सुपौल, ''बादल का पानी ईश्वर की देन है भला वह कैसे खराब हो सकता है। वर्षाजल संग्रहण के बारे मे पता नहीं था वरना हम इस तकनीक का फायदा बाढ़ के दौरान अवश्य उठाते''

महात्मा जी

ग्राम-मूंगरार, पंचायत बैरिया, जिला-सुपौल, ''हमारे आश्रम के द्वारा आस-पास के जिलों में भी वर्षाजल संग्रहण की सोच को फैलाया गया है। इस इलाके में स्थानीय संसाधनों के मद्द से ऐसे उपाय की बाढ़ के समय बहुत आवश्यकता थी''

सैनी सदा

ग्राम-धीवक (बांध टोला), पंचायत बैरिया, जिला-सुपौल, ''वर्षाजल पीने से खाना आसानी से पच जाता है और भूख जल्दी लग जाती है। दूसरी बात, पाचन शक्ति के कारण मुझे कब्ज की तकलीफ से छुटकारा मिला है। मैं रोज रात को सोने से पहले एक ग्लास वर्षाजल अवश्य पीता हूँ''

अशोक कुमार

ग्राम-उदनघरारी, पंचायत दहमा-खेरी-खुटहा, जिला-खगड़िया, ''हमने व्यक्तिगत स्तर पर इसका इस्तेमाल किया है। यह इसलिये सम्भव हुआ क्योंकि यह उपाय स्थानीय संसाधनों पर पूरा निर्भर है। इतने सस्ते में किसी और तरीके से स्वच्छ पानी मिलना मुश्किल है''

घूरनदास

ग्राम-कोठिया (जगदीशपूर), पंचायत महिषी (उत्तर), जिला-सहरसा, ''पानी अच्छा है। पीने में पतला महसूस होता है और खास कर चापाकल के पानी से स्वादिष्ट है''

संजूला देवी

ग्राम-लदौरा, पंचायत दहमा-खेरी-खुटहा, जिला-खगड़िया, ''सारा खाना वर्षाजल से बनाया है-चावल, केड़ाऊ का दाल और सब्जी। सब पहले से ज्यादा अच्छे लगे। इसका मतलब वर्षाजल में ही स्वाद है''

रेशमा देवी

ग्राम-रेहीका (महतो टोल), पंचायत लखनौर (पश्चिमी), जिला-मधुबनी, ''२००६ में बारिश बहुत कम हुई, लेकिन वर्षाजल को पीने के बाद मुझे इतना अच्छा लगा कि थोड़ी बारिश में भी मैं ज्यादा से ज्यादा इकट्ठा करने की प्रयास करती हूँ''

राम वीलास सदा

ग्राम-दहमा, पंचायत दहमा-खेरी-खुटहा, जिला-खगड़िया, ''हमें एक नये विचार से अवगत कराया गया है, जिससे लोगों को बाढ़ के समय स्वच्छ पानी मिल सकता है। इसे लोग अवश्य अपने जीवन का अंग बनायेंगे और बाढ़ के समय भी इसका उपयोग करेंगें''

पौद्धार बाबा

ग्राम-महिषी, पंचायत महिषी (उत्तर), जिला-सहरसा, ''मैंने मात्र २० रुपये में अपने घर पर वर्षाजल संग्रहण तकनीक को अपनाया है। खुशी की बात है कि वर्षाजल पीने के बाद मुझे पेट की बीमारी से मुक्ति मिली है''

शशीकला देवी

ग्राम-सोनमनकी घाट (सदा टोला), पंचायत दहमा-खेरी-खुटहा, जिला-खगड़िया, ''हम अपने घर पर वर्षाजल का संग्रहण करते है। यह कंचन पानी है। इस पानी से खाना बनाने में समय बहुत कम लगता है और बचे हुए समय में, मैं अपना और अपने बच्चों के स्वास्थ्य का ख्याल रखती हूँ''

आशा देवी

ग्राम-रेहीका (मोची टोल), पंचायत लखनौर (पश्चिमी), जिला-मधुबनी, ''मैं व्यक्तिगत स्तर पर दूसरों को वर्षाजल के महत्त्व को समझाने के लिये सबसे पहले इस से जूड़े सभी भ्रम को दूर करूंगी और इस जल के फायदे के बारे में बताऊगीं''

बासुदेव पासवान

ग्राम-मलहद (पासवान टोला), पंचायत बैरिया, जिला-सुपौल, ''इस पानी को पीने के बाद हमारा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है। हमें न बुखार, सर्दी, खाँसी या घेंघा जैसी बीमारियों का सामना करना पड़ा''

जूलेखा खातुन

ग्राम-चकला (पूर्वी), पंचायत बैरिया, जिला-सुपौल, ''हमारे परिवार में वर्षाजल में खाना बना और बहुत स्वादिष्ट लगा। चापाकल के पानी से खाना और चाय दोनों काले हो जाते थे, मगर वर्षाजल के इस्तेमाल से ऐसा कुछ भी नहीं हुआ''

उमा देवी

ग्राम-गओरहो घाट, पंचायत महिषी (उत्तर), जिला-सहरसा, ''वर्षाजल बहुत साफ है। हम लोग इसे लगभग २५ दिनों से रखे हैं और वह आज भी पीने में अच्छा लगता है। इस पानी को पीने से पाचन शक्ति भी बढ़ी है''

महमूद आलम

ग्राम-औंकुसी, पंचायत लखनौर (पश्चिमी), जिला-मधुबनी, ''पहले हमारे पूर्वज बोतल में वर्षाजल को रखकर जलोदर और पैनदुदुर की बीमारी को ठीक करते थे । आज इन सब बातों को भूला दिया गया है। शायद इस वर्षाजल संग्रहण के द्वारा हम पूरानी सोच को पूर्णजीवित कर सकें''

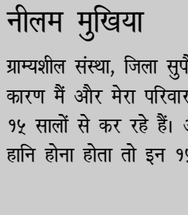

नीलम मुखिया

ग्राम्यशील संस्था, जिला सुपौल, ''पेयजल के अभाव के कारण मैं और मेरा परिवार वर्षाजल का सेवन पिछले १५ सालों से कर रहे हैं। अगर किसी भी तरीके का हानि होना होता तो इन १५ सालों में अवश्य हो जाता''

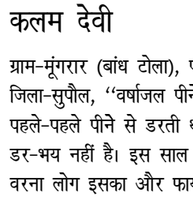

कलम देवी

ग्राम-मूंगरार (बांध टोला), पंचायत बैरिया, जिला-सुपौल, ''वर्षाजल पीने में मजा आता है। पहले-पहले पीने से डरती थी लेकिन अब कोई डर-भय नहीं है। इस साल बारिश बहुत कम हुई वरना लोग इसका और फायदा लेते''

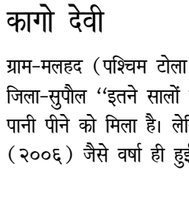

कागो देवी

ग्राम-मलहद (पश्चिम टोला), पंचायत बैरिया, जिला-सुपौल ''इतने सालों में पहली बार इतना अच्छा पानी पीने को मिला है। लेकिन अगर इस साल (२००६) जैसे वर्षा ही हुई तो फिर क्या करेंगे

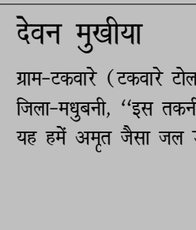

देवन मुखीया

ग्राम-टकवारे (टकवारे टोल), पंचायत लखनौर (पश्चिमी), जिला-मधुबनी, ''इस तकनीक को नहीं भूल पायेंगे क्योंकि यह हमें अमृत जैसा जल उपलब्ध कराता है''

मेघ पाईन अभियान के स्वच्छ पेयजल के कम लागत वाले वैकल्पिक उपाय के कारण २००६ में उत्तर बिहार के चार जिले में कम वर्षा होने के बावजूद भी लोग जितना सम्भव हुआ, इस जल का संग्रह और उपयोग किये